JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छात्रों पर मिशनरी स्कूलों का सामाजिक प्रभाव – एक अध्ययन

सुरेश बिन्द
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (विभागाध्यक्ष)
मनोविज्ञान विभाग, पी.बी.एस. कॉलेज, बांका, तिलकामांझी भागलपुर विष्वविद्यालय, भागलपुर

सारः यह अध्ययन विभिन्न आयामों का विश्लेषण करते हुए सामाजिक ताने–बाने पर इन स्कूलों के बहुमुखी प्रभाव की पड़ताल करता है। यह अध्ययन सांस्कृतिक मतभेदों, धार्मिक दृष्टिकोणों और कुछ विचारधाराओं को थोपे जाने से उत्पन्न होने वाली संभावित चुनौतियों और संघर्षों की भी जांच करता है। इसके अलावा, यह आलेख सामाजिक–आर्थिक निहितार्थों पर प्रकाश डालता है। यह आलेख जांच करता है कि मिशनरी स्कूलों के छात्रों को समाज में विशिष्ट फायदे या नुकसान का अनुभव होता है या नहीं। यह धारणाओं का आकार देने और समावेशिता या विशिष्टता को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका पर विचार करता है। साथ ही यह आलेख छात्रों पर मिशनरी स्कूलों के बहुमुखी सामाजिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है, इस प्रभाव के सकारात्मक और संभावित रूप से चुनौतीपूर्ण दोनों पहलुओं की खोज करता है। आलेख का उद्देश्य सामाजिक परिदृश्य को आकार देने में मिशनरी स्कूलों की भूमिका पर अधिक जानकारीपूर्ण संवाद को बढ़ावा देना, शिक्षकों, नोति निर्माताओं और बड़े पैमाने पर समाज के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करना है।

कीवर्डः मिशनरी स्कूल, सांस्कृतिक मतभेद, सामाजिक–आर्थिक निहिताथ, धार्मिक दृष्टिकोण।

परिचय

शिक्षा एक शक्तिशाली उपकरण है जो व्यक्तियों और समाज के जीवन को आकार देता है। पूरी दुनिया में औपचारिक शिक्षा के विकास के लिए ईसाई मिशनरी महत्वपूर्ण थे। वे आम तौर पर पहली पश्चिमी औपचारिक शिक्षा प्रदान करते थे, अक्सर शुरुआत में स्थानीय प्रतिरोध के खिलाफ। उन्होंने इस शिक्षा के आर्थिक मूल्य का प्रदर्शन किया – जिसने बाद की माँग को बढ़ाया। उन्होंने कई शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जो गैर–मिशनरी स्कूलों में काम करते थे। उन्होंने महिलाओं और गरीब लोगों के लिए शिक्षा का बीड़ा उठाया। वे यूरोपीय भाषाओं, पश्चिमी विज्ञान और पश्चिमी चिकित्सा के प्रमुख प्रारंभिक शिक्षक थे। इन नवाचारों के दुनिया भर में कई महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम हुए।

मिशनरी स्कूलों ने, शिक्षा के प्रति अपने विशिष्ट दृष्टिकोण के साथ, लंबे समय से अपने द्वारा पढ़ाए जाने वाले छात्रों के जीवन को प्रभावित करके सामाजिक ताने–बाने को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये स्कूल अक्सर धार्मिक मिशनों से जुड़े होते हैं और इनका उद्देश्य न केवल शिक्षा देना है बल्कि अपने छात्रों को मूल्य और विष्वास भी प्रदान करना है। यह आलख छात्रों पर मिशनरी स्कूलों के सामाजिक प्रभाव पर प्रकाश डालता है, यह जांच करता है कि ये संस्थान छात्रों के व्यक्तिगत विकास, मूल्यों और व्यापक सामाजिक संबंधों को कैसे प्रभावित करते हैं।

ऐतिहासिक संदर्भ

मिशनरी स्कूलों का एक लंबा इतिहास है जो कई शताब्दियों पुराना है। वे अक्सर धार्मिक संगठनों द्वारा अपने विष्वास को फैलाने और स्थानीय आबादी को शिक्षा प्रदान करने के प्राथमिक लक्ष्य के साथ स्थापित किए गए थे। ये स्कूल विशेष रूप से औपनिवेशिक क्षेत्रों में प्रचलित थे जहाँ यूरोपीय शक्तियाँ स्वदेशी लोगों की संस्कृति आर मान्यताओं को प्रभावित करने की कोशिश करती थीं।

समय के साथ, मिशनरी स्कूलों का फोकस विकसित हुआ है, लेकिन उनका मुख्य मिशन वही है – उनकी धार्मिक मान्यताओं में निहित मूल्यों को शिक्षित करना और स्थापित करना। आज, मिशनरी स्कूल दुनिया के विभिन्न हिस्सा में पाए जाते हैं और वे शिक्षा प्रणालियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारत में मिशनरी स्कूलों का ऐतिहासिक विकास

भारत में प्रारंभिक मिशनरी गतिविधियाँः भारत में ईसाई मिशनरियों के आगमन का पता 16वीं शताब्दी से लगाया जा सकता है जब पुर्तगालियों ने पश्चिमी तट पर अपना पैर जमाया था। हालाँकि, ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, विशेषकर 19वीं शताब्दी में, मिशनरी आंदोलन ने गति पकड़ी। इस अवधि में कई मिशनरी समाजों की स्थापना देखी गई, जैसे कि चर्च मिशनरी सोसाइटी (सीएमएस), सोसाइटी फॉर द प्रोपेगेशन ऑफ द गॉस्पेल इन फॉरेन पार्ट्स (एसपीजी), और अमेरिकन बोर्ड ऑफ कमिश्नर्स फॉर फॉरेन मिशन्स (एबीसीएफएम)। इन संगठनों का लक्ष्य ईसाई धर्म का प्रसार करना था लेकिन उन्होंने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षा के महत्व को भी पहचाना।

लड़कियों के लिए मिशनरी स्कूलों की स्थापनाः भारत में मिशनरी गतिविधियों की एक विशिष्ट विशेषता लड़कों और लड़कियों दोनों को शिक्षित करने पर जोर देना था, हालाँकि लड़कियों पर अधिक महत्वपूर्ण ध्यान केंद्रित किया गया था। जबकि पारंपरिक भारतीय समाज अक्सर महिलाओं को अपने घरों तक ही सीमित रखता था, मिशनरी स्कूलों ने उन्हें औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया। इन संस्थानों में प्रमुख था कलकत्ता में बेथ्यून स्कूल, जिसकी स्थापना 1849 में जॉन इलियट ड्रिंकवाटर बेथ्यून ने की थी। बेथ्यून स्कूल विशेष रूप से लड़कियों को शिक्षा प्रदान करने वाला पहला संस्थान था, और इसने बाद में आने वाले अन्य मिशनरी स्कूलों के लिए एक मिसाल कायम की।

मिशनरी स्कूलों का विस्तारः लड़कियों के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने में प्रारंभिक मिशनरी स्कूलों की सफलता ने देश भर में इसी तरह के संस्थानों की स्थापना को प्रेरित किया। अलेक्जेंडर डफ, मैरी कारपेंटर और इसाबेला थोबर्न जैसे उल्लेखनीय मिशनरी शिक्षकों ने मिशनरी स्कूलों के नेटवर्क के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये संस्थान अक्सर शहरी क्षेत्रों में स्थित होते थे और इनमें पारंपरिक भारतीय स्कूलों की तुलना में अधिक आधुनिक पाठ्यक्रम होता था। पाठ्यक्रम में अंग्रेजी, विज्ञान और गणित जैसे विषय शामिल थे, जो भारतीय महिलाओं के बौद्धिक क्षितिज को व्यापक बनाने में सहायक थे।

मिशनरी स्कूलों के उद्देश्य

ईसाई मूल्यों को बढ़ावा देनाः मिशनरी स्कूलों का एक प्राथमिक उद्देश्य ईसाई मूल्यों को बढ़ावा देना और भारतीयों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना था। शिक्षा को ईसाई धर्म के प्रचार के साधन के रूप में देखा जाता था, और मिशनरी शिक्षकों का मानना था कि शिक्षित भारतीयों के ईसाई धर्म में परिवर्तित होने की अधिक संभावना थी। परिणामस्वरूप, मिशनरी स्कूलों में धार्मिक शिक्षा पाठ्यक्रम का एक मूलभूत हिस्सा थी।

भारतीय महिलाओं को सशक्त बनानाः मिशनरी स्कूलों का एक अन्य प्रमुख उद्देश्य शिक्षा के माध्यम से भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरण था। मिशनरियों ने माना कि महिलाओं को शिक्षित करना न केवल उनके आध्यात्मिक विकास के लिए बल्कि समग्र रूप से भारतीय समाज की उन्नति के लिए भी आवश्यक है। शिक्षित महिलाएँ अपने समुदायों के भीतर परिवर्तन की एजेंट बनने, पारंपरिक मानदंडों को चुनौती देने और सामाजिक सुधार की वकालत करने की अधिक संभावना रखती थीं।

सामाजिक सुधार को बढ़ावा देनाः मिशनरी स्कूल अक्सर भारत में सामाजिक सुधार आंदोलनों में सबसे आगे थे। इन स्कूलों में पढ़ने वाली शिक्षित महिलाओं ने बाल विवाह, सती (विधवा आत्मदाह) और जाति व्यवस्था जैसी सामाजिक प्रथाओं में बदलाव की वकालत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पंडिता रमाबाई और रुखमाबाई जैसी प्रमुख हस्तियां महिलाओं के अधिकारों और सामाजिक सुधार की चैंपियन बन गईं और मिशनरी स्कूलों में उनकी शिक्षा ने उनकी सक्रियता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मिशनरी स्कूलों का सामाजिक प्रभाव

इस मिशनरी शिक्षा ने कई सामाजिक परिणामों को प्रेरित किया है जिनमें से कुछ प्रमुख प्रभावों को नीचे वर्णित किया गया है –

1. व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माणः छात्रों पर मिशनरी स्कूलों के सामाजिक प्रभाव का सबसे प्रमुख पहलू व्यक्तिगत विकास और चरित्र निर्माण पर उनका जोर है। ये स्कूल अक्सर करुणा, सहानुभूति, विनम्रता और दूसरों की सेवा जैसे मूल्यों पर ज़ोर देते हैं, जो सभी उनकी धार्मिक शिक्षाओं में निहित हैं। मिशनरी स्कूलों में छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए बल्कि जिम्मेदार और दयालु व्यक्ति बनने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाता है। चरित्र विकास पर यह जोर छात्रों के जीवन पर स्थायी प्रभाव डाल सकता है। मिशनरी स्कूलों के कई पूर्व छात्र अक्सर इन संस्थानों में अपने समय के दौरान उनमें स्थापित मूल्यों को अपनी मजबूत नैतिक और नैतिक नींव का श्रेय देते हैं।

मूल्य और नैतिकता का विकासः मिशनरी स्कूल आमतौर पर धार्मिक शिक्षाओं को अपने पाठ्यक्रम में शामिल करते हैं, और छात्रों को नियमित आधार पर इन शिक्षाओं से अवगत कराया जाता है। यह प्रदर्शन छात्रों के मूल्यों और नैतिकता पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। वे अक्सर अपने विष्वास की नैतिक शिक्षाओं के आधार पर सही और गलत की मजबूत समझ विकसित करते हैं। हालाँकि इससे एक मजबूत नैतिक दिशा–निर्देश पैदा हो सकता है, लेकिन इसके परिणामस्वरूप छात्रों के विष्वासों में कुछ हद तक कठोरता भी आ सकती है। कुछ लोगों का तर्क है कि मिशनरी स्कूल छात्रों के विविध दृष्टिकोणों और वैकल्पिक विष्वास प्रणालियों के संपर्क को

सीमित कर सकते हैं, जिससे संभावित रूप से खुले दिमाग और आलोचनात्मक सोच में संलग्न होने की उनकी क्षमता में बाधा आ सकती है।

सामाजिक उत्तरदायित्व और सामुदायिक सहभागिताः कई मिशनरी स्कूल सामाजिक जिम्मेदारी और सामुदायिक सहभागिता पर ज़ोर देते हैं। छात्रों को सामुदायिक सेवा परियोजनाओं और आउटरीच कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। इससे उनके समुदायों के प्रति जिम्मेदारी की भावना और दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने की इच्छा पैदा होती है। ये अनुभव छात्रों पर स्थायी प्रभाव डाल सकते हैं, सहानुभूति की भावना और सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा द सकते हैं। मिशनरी स्कूलों से स्नातक करने वाले हाई स्कूल के छात्र अक्सर सक्रिय स्वयंसेवक बन जाते हैं और विभिन्न सामाजिक कारणों के समर्थक बन जाते हैं।

सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावाः मिशनरी स्कूली शिक्षा ने सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा दिया। मिशनरी स्कूल बड़े पैमाने पर साक्षरता चाहते थे और गरीब छात्रों की शिक्षा को सक्रिय रूप से सब्सिडी देते थे। इनमें से कई छात्रों को बाद में शिक्षकों, पादरी, विदेशी कंपनियों के कर्मचारियों या सिविल सेवकों के रूप में नौकरी मिली और उनके बच्चों ने अक्सर उच्च सामाजिक स्थिति प्राप्त को।

महिलाओं के लिए नए अवसर खोलनाः मिशनरी स्कूली शिक्षा ने महिलाओं के लिए नए अवसर खोले। भारत में पारंपरिक शिक्षा प्रणाली मुख्य रूप से पुरुषों पर केंद्रित थी। महिलाओं को शिक्षित करने का आर्थिक लाभ बहुत कम माना जाता था और कभी–कभी इसे नैतिक रूप स खतरनाक भी माना जाता था। मिशनरी स्कूल ने दुनिया में महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा की शुरुआत की। हालांकि, शुरुआत में महिलाओं की मिशनरी शिक्षा ने पर्याप्त स्थानीय प्रतिरोध पैदा किया।

स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकताः मिशनरी स्कूलों ने स्वच्छता और सार्वजनिक स्वास्थ्य की शिक्षा देकर, महिलाओं को बच्चे के जन्म, पोषण और शिशु स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित करके और नई फसलों और पशुओं को पेश करके स्वास्थ्य मानकों में सुधार किया, जिससे आहार में सुधार हुआ।

सांस्कृतिक संवेदनशीलता और सहिष्णुताः कुछ मामलों में, मिशनरी स्कूल विविध सांस्कृतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि वाले क्षेत्रों में संचालित होते हैं। इससे एक दिलचस्प गतिशीलता पैदा हो सकती है जहां विभिन्न धर्मों और पृष्ठभूमि के छात्र एक ही शैक्षिक वातावरण में एक साथ आते हैं। हालाँकि इन स्कूलों का लक्ष्य अपनी धार्मिक मान्यताओं को बढ़ावा देना है, वे अक्सर अन्य संस्कृतियों और धर्मों के प्रति सहिष्णुता और सम्मान को भी बढ़ावा देते हैं। विविधता का यह अनुभव हाई स्कूल के छात्रों के लिए एक मूल्यवान अनुभव हो सकता है, जो उन्हें मतभेदों की सराहना करना और उन्हें स्वीकार करना सिखाएगा। यह वैष्विक नागरिकता की भावना और विभिन्न समुदायों के बीच पुल बनाने की प्रतिबद्धता को भी बढ़ावा दे सकता है।

स्थानीय भाषाओं को बढ़ावाः अंग्रेजी पढ़ाने के अलावा, कई मिशनरी स्कूलों ने स्थानीय भाषाओं को बढ़ावा देने के महत्व को पहचाना। इस दृष्टिकोण ने महिलाओं को अपनी मूल भाषाओं में शिक्षा प्राप्त करने की अनुमति दी, जिससे यह आबादी के व्यापक हिस्से के लिए अधिक सुलभ और प्रासंगिक हो गई। स्थानीय भाषाओं पर जोर देने से पारंपरिक भारतीय संस्कृति और आधुनिक शिक्षा के बीच की खाई को पाटने में मदद मिली।

शैक्षिक सुधारों पर प्रभावः मिशनरी स्कूलों का प्रभाव उनकी निकटवर्ती कक्षाओं से भी आगे तक फैला हुआ था। आधुनिक शिक्षा, विज्ञान और अंग्रेजी भाषा दक्षता पर उनके जोर ने व्यापक भारतीय शिक्षा प्रणाली को प्रभावित किया। राजा राम मोहन राय और स्वामी विवेकानन्द सहित भारतीय नेताओं और सुधारकों ने मिशनरी शिक्षा के मूल्य को पहचाना और इसे भारतीय शैक्षिक ढांचे में शामिल करने की वकालत की।

महिला सशक्तिकरण में योगदानः शायद मिशनरी स्कूलों का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव भारत में महिला सशक्तिकरण में उनका योगदान था। इन स्कूलों से शिक्षित महिलाएँ शिक्षा, सामाजिक सुधार और राजनीति सहित विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी बनीं। उन्होंने महिलाओं के अधिकारों की वकालत करने, दमनकारी रीति–रिवाजों को चुनौती देने और आधुनिक भारत के विकास में योगदान देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मिशनरी स्कूलों के सामने चुनौतियाँ

सांस्कृतिक प्रतिरोधः मिशनरी स्कूलों को भारतीय समाज के रूढ़िवादी वर्गों से महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। कई भारतीय इन स्कूलों को संदेह की दृष्टि से देखते थे, उनका मानना था कि मिशनरियों का अंतिम उद्देश्य छात्रों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना था। इस प्रतिरोध के कारण कभी–कभो कुछ क्षेत्रों में मिशनरी स्कूलों की स्थापना का विरोध और विरोध हुआ।

वित्तीय बाधाएँः मिशनरी स्कूलों के संचालन के लिए वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती थी, और धन अक्सर विदेशी मिशनरी संगठनों से आता था। हालाँकि, वित्तीय बाधाएँ कभी–कभी इन स्कूलों के विस्तार और स्थिरता में बाधा बनती थीं। विदेशी फंडिंग पर निर्भरता ने भी उन्हें बदलती राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील बना दिया।

लिंग मानदंड और प्रतिबंधः भारत के कई हिस्सों में, सामाजिक मानदंडों ने महिलाओं के घर से बाहर जाने और बातचीत करने पर प्रतिबंध था। इसने मिशनरी स्कूलों के लिए महिला छात्रों की भर्ती और उन्हें बनाए

रखने में चुनौतियाँ खडो कर दीं। मिशनरियों को स्थानीय समुदायों का विष्वास हासिल करने और माता–पिता को अपनी बेटियों को स्कूल भेजने के लिए मनाने के लिए कड़ी मेहनत करनी पड़ी।

सांस्कृतिक और धार्मिक मतभेदः जबकि मिशनरी स्कूलों का लक्ष्य एक समावेशी वातावरण बनाना है, सांस्कृतिक और धार्मिक मतभेदों से संबंधित चुनौतियाँ हो सकती हैं। मूल्यों का एक विशेष समूह प्रदान करते हुए विविधता का सम्मान करने वाला संतुलन बनाना एक नाजुक कार्य हो सकता है।

सामाजिक–आर्थिक गतिशीलताः मिशनरी स्कूलों का प्रभाव छात्रों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर भिन्न हो सकता है। इन स्कूलों तक पहुंच कुछ जनसांख्यिकी के लिए सीमित हो सकती है, जो संभावित रूप से शैक्षिक अवसरों में असमानताओं में योगदान दे सकती है।

वैचारिक अधिरोपणः आलोचकों का तर्क है कि कुछ मिशनरी स्कूल विशिष्ट विचारधाराओं को लाग् कर सकते हैं, जो संभावित रूप से छात्रों के विविध दृष्टिकोणों के संपर्क को सीमित कर सकते हैं और महत्वपूर्ण सोच कौशल के विकास में बाधा डाल सकते हैं।

आलोचनाएँ और विवाद

मिशनरी स्कूलों के सकारात्मक पहलुओं के बावजूद, वे विवादों और आलोचनाओं से अछूते नहीं रहे हैं। कुछ लोगों का तर्क है कि ये स्कूल अत्यधिक हठधर्मी हो सकते हैं, आलोचनात्मक पूछताछ या स्वतंत्र विचार की अनुमति दिए बिना छात्रों पर धार्मिक विष्वास थोप सकते हैं। आलोचकों का यह भी कहना है कि मिशनरी स्कूलों द्वारा प्रचारित मूल्य हमेशा लैंगिक समानता, एलजीबीटीक्यू+ अधिकार और प्रजनन स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर समकालीन विचारों के साथ संरेखित नहीं हो सकते हैं।

इसके अलावा, ऐसे ऐतिहासिक उदाहरण भी हैं जहां मिशनरी स्कूलों पर सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, प्रमुख औपनिवेशिक संस्कृति और धर्म के पक्ष में स्वदेशो संस्कृतियों और मान्यताओं को मिटाने या दबाने का प्रयास करने का आरोप लगाया गया था। ये चिंताएँ मिशनरी स्कूलों को अपने धार्मिक मिशन और सांस्कृतिक विविधता और व्यक्तिगत अधिकारों के सम्मान के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता पर प्रकाश डालती हैं।

निष्कर्ष

मिशनरी स्कूल छात्रों के व्यक्तिगत विकास, मूल्यों और समाज के साथ जुड़ाव को आकार देकर उन पर महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव डालते हैं। ये संस्थान अक्सर चरित्र निर्माण, मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी पर जोर देते हैं, जिससे छात्र जिम्मेदार और दयालु व्यक्ति बन सकते हैं। हालाँकि, संभावित कमियों को पहचानना आवश्यक है, जिसमें हठधर्मिता, सांस्कृतिक असंवेदनशीलता और व्यक्तिगत अधिकारों और सांस्कृतिक विविधता का सम्मान करने वाले संतुलित दृष्टिकोण की आवश्यकता के बारे में चिंताएं शामिल हैं। किसी भी शैक्षणिक संस्थान की तरह, छात्रों पर मिशनरी स्कूलों का प्रभाव स्कूल के विशिष्ट मिशन, जिस क्षेत्र में यह संचालित होता है, और इसके शिक्षकों के दृष्टिकोण जैसे कारकों के आधार पर व्यापक रूप से भिन्न हो सकता है। अंततः, छात्रों पर मिशनरी स्कूलों का सामाजिक प्रभाव एक जटिल और बहुआयामी मुद्दा है जिस पर विचारशील विचार और निरंतर बातचीत की आवश्यकता है।

संदर्भ

अप्पिया, ओ. (2008). "घाना में मिशनरी स्कूल और ईसाई मिशनः बेसल मिशन स्कूलों का एक ऐतिहासिक अध्ययन, 1828–1888", अफरीकन स्टडिज क्वॉटलि", 10(3), 47–62।

एचिसन, जे. (2003). "फैथ एंड डूटीः इ फाउंडिंग ऑफ लोरेटो, ए पायनियर मिशनरी स्कूल", हिस्ट्री ऑफ एडुकेषन, 32(4), 347–362.

जॉनसन, ई.एस. (2007). "धर्म और स्थिरताः सामाजिक पूंजी और धार्मिक शिक्षा का प्रभाव", जर्नल फॉर द साइंटिफिक स्टडि ऑफ रिलीजन, 46(2), 155–169।

डिसूजा, पो.वी. (2017). "मिशनरी एजुकेषन एंड इट्स इम्पेक्ट ऑन आईडेन्टिटी एंड सोषल चेंजः ए केस स्टडी ऑफ शक्षा कर्नाटक, इंडिया", यूरोपियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 53(2), 199–214।

दीब, एल. (2006). "एन एनचांटेड मोडेमः जेंडर एंड पब्लिक पाइअटि इन लेबनान", प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

नक्वोका, आई. ए. (2012). "नाइजीरिया में शिक्षा के विकास में मिशनरी स्कूलों की भूमिका", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस, 2(4), 166–173।

म्वांगी, जे.के. (2014). "केन्या में शिक्षा के विकास में मिशनरी स्कूलों की भूमिकाः चर्च ऑफ़ स्कॉटलैंड मिशन का एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण (1900–1930)", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, 2(11), 181–198।

यंग, के. (2003). "औपनिवेशिक भारत में लड़कियों की शिक्षा में मिशन स्कूलों की भूमिका", लिंग और शिक्षा, 15(4), 343–357.

रमन, भवानो (2003). "मिशनरीज़, एजुकेशन एंड वुमेन एम्पावरमेंट इन कोलोनियल इंडिया", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम 38, नंबर 42.

साहा, अरुणोदय (2015). "बेथ्यून एंड मिशनरी एजुकेशन इन कोलोनियल बंगाल", इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, वॉल्यूम 42.

ज्ञानमुथु, एम. (2016). "भारत में शिक्षा पर ईसाई मिशनों का प्रभाव", जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन, खंड 6, संख्या 1.